शोध-मंथन Vol. VIII No. 1, 2017 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

शोध मंथन

कविताएं

डॉ. पी. के. दास
विभाग दर्शनशास्त्र
के. वे.पी.जी. कॉलेज, माछरा, मेरठ

शासक के नीचे

शासकी सर्वोच्चता
घाटियों
तथा भीड़ भाड़ वाले शहरों
पर
एक कुटिया में
एक सुप्त शिशु
मोमबत्ती की लौ पर, नाचती
परछाईयाँ

पी0 के0 दास

 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

खन्डहरों के सपने

पतझड़ के पत्तों के पीछे
विहगों का गीत
एक बूढ़ा सावन्त
परदेश जाने की तैयारी में
दो बच्चे
नदी किनारे
खेलते
बालुकाओं
के ढेर से।

पी0के0 दास

 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

स्मृति और किरण

चिड़ियों की चहचहाट
को मैं सुन रहा हूँ
बारम्बार
इन हरित घाटियों में
इस वृक्ष के नीचे
जहाँ
जाने और अनजाने
वृक्षों के
स्मृतियाँ
मूर्त रूप में
पहाड़ियों
के चरणों में
वृक्षों से छन
कर अति
नीचे के
किरणों के रूप में

पी0के0 दास

 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

बिम्बों का नृत्य

जल पर
प्रकट होती बिम्बों
की नृत्य
कुछ नहीं,
नाचता
किसी अज्ञात
संगीत की लय पर
पुनर्जीवन
प्राप्त करने को आतुर
कुछ बनती, बिगड़ती, तस्वीरे
दर्पण और जल
एक दूसरे पर मुग्ध

पी0के0 दास

 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

मृतों का पुर्नजीवन

मृतों का पुर्नजीवन
वे वापस लौटे
चुपचाप, चोरों जैसे
प्रभात बेला से पहले
गद्य और पद्य
शैली में
जब उतर आती
है
साँझ;
एक अर्ध लिखित पत्र
काव्य जो वितरित है
अनगिनत पत्र पत्रिकाओं में,
मृत कवियों के
काव्य सृजन पहले के रात में।

पी0के0 दास

 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

सागर पार की चिट्ठि

एक
बेनाम चिट्ठि
न जाते किस सागर पार से
माता खासों पर
बहते चले आए
बीस साल पहले
एक ऐसी ही चिट्ठी मिली थी;
आनन्द तथ आश्चर्य
गोधुली बेला की ओर
संकेत करता हुआ
मृत्यु की रात
सूक्ष्म लेखनी की धार पर
आने वाले दिनों की ओर
जाने को आतुर

पी0 के0 दास